ऑनलाइन शिक्षण
अध्यापकों एवं विद्यार्थियों की चुनौतियाँ तथा समाधान

शचीन्द्र आर्य*
पूजा**

यह सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के कारण उत्पन्न होने वाली चुनौतियों और प्रश्नों पर आधारित एक लघु शोध पत्र है। जिसे कोविड-19 की अप्रत्याशित परिस्थिति में स्कूल बंद किए जाने के दौरान ऑनलाइन शिक्षण के आलोक में लिखा गया है। इस लेख के लिए दिल्ली के सात सरकारी स्कूल शिक्षकों से साक्षात्कार द्वारा प्राथमिक प्रदत्त (डेटा) एकत्रित किया गया था। जिसमें माध्यमिक विद्यालय तक सभी विषयों के शिक्षक थे अर्थात् यह साक्षात्कार अंग्रेज़ी, हिंदी, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों द्वारा किए जा रहे शिक्षण पर आधारित है। अध्यापकों की यह भागीदारी पूर्णतः स्वैच्छिक थी। इस शोध पत्र में तीन मुख्य क्षेत्रों की जाँच की गई है। सबसे पहले, विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए उपयोग की जाने वाली विधियाँ और उनके प्रभाव को देखना है। दूसरे, ऑनलाइन शिक्षण के दौरान विद्यार्थी-शिक्षक संबंध एवं अंत में शिक्षकों के बीच कार्य-जीवन संतुलन है।

वर्ष 2020 की शुरुआत से ही दुनिया भर के देशों में लोगों के कोविड-19 से संक्रमित होने की खबरें आने लगी थीं। घटनाक्रम इस गति से बदल रहा था कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) ने इसे 22 मार्च को महामारी घोषित कर दिया। इसके परिणामस्वरूप केंद्र सरकार ने राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन लगाने का फ़ैसला किया।

भारत में अप्रैल माह को दिल्ली समेत अधिकांश राज्यों के विद्यालयों में नए सत्र की शुरुआत के रूप में देखा जाता है। परंतु संक्रमण के संभावित खतरों को देखते हुए 19 मार्च को ही दिल्ली सरकार ने शैक्षिक संस्थानों को 31 मार्च तक बंद करने के फ़ैसले की घोषणा कर दी। ऐसी परिस्थिति में विद्यालयों को फिर से खोलने और शैक्षिक गतिविधियों को लेकर शिक्षकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों में असमंजस की स्थिति बनने लगी। इस आपात स्थिति में यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि ऐसा क्या किया जाए, जिससे विद्यार्थियों और सत्र की न्यूनतम क्षति हो।

इन परिस्थितियों में 'ऑनलाइन' शिक्षण एक विकल्प के रूप में उपस्थित होता दिखाई देता है। सभी को लगता है, इस माध्यम से विद्यार्थियों की पढ़ाई को अबाध गति से, बिना रोके करवाया जा सकता है। विद्यालय स्तर पर ऑनलाइन शिक्षण का विचार इस सघनता के साथ पहली बार हमें अब

**शोधार्थी*, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110007
***शोधार्थी*, समाज कार्य विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110007

© NCERT not to be republished

महसूस हुआ है। सैद्धांतिक रूप से इसमें विद्यालय के खुलने या बंद होने से फ़र्क नहीं पड़ना चाहिए। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों इस माध्यम से आपस में जुड़े रह सकते हैं और शिक्षण किया जा सकता है।

यह लेख शासकीय विद्यालयों के अध्यापकों के अनुभवों के आधार पर तीन बिंदुओं की पड़ताल करता है। ये बिंदु हैं—

- विभिन्न विषयों में ऑनलाइन शिक्षण की विधियाँ और उनका प्रभाव;
- शिक्षक व विद्यार्थियों के बीच संबंध; और
- शिक्षकों का कार्य-जीवन संतुलन।

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमने जून माह में दिल्ली के शासकीय विद्यालयों में कार्यरत सात शिक्षकों से इस संबंध में बातचीत की। इस चर्चा में अंग्रेज़ी, हिंदी, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान जैसे मुख्य विषयों के शिक्षकों ने अपनी स्वेच्छा से भाग लिया। हमने उनसे पारंपरिक और ऑनलाइन दोनों तरह के शिक्षण के बारे में जाना। बातचीत में इस नयी बन रही परिस्थिति में प्रौद्योगिकी का उपयोग और मल्टीमीडिया स्रोतों के विषय में भी महत्वपूर्ण बिंदु उभरकर सामने आए। इसके साथ-साथ शिक्षण की प्रक्रिया और शैक्षणिक जटिलताओं पर भी चर्चा की गई। बातचीत में यह बिंदु उभरकर आया कि कुछ विषयों को आसानी से पढ़ाया जा सकता है, लेकिन ऑनलाइन शिक्षा विद्यालय की कक्षा का कोई विकल्प नहीं है। लेकिन वह यह भी रेखांकित करते हैं कि इन विपरीत परिस्थितियों से जो हम सीख रहे हैं, उनका उपयोग दोबारा विद्यालय खुलने के बाद आने वाली चुनौतियों और भविष्य में आने वाली ऐसी अन्य स्थितियों के लिए किया जा सकता है।

ऑनलाइन वर्चुअल कक्षा

ऑनलाइन शिक्षण के कई फ़ायदे माने जाते हैं। यह शिक्षक और शिक्षार्थी को समय और स्थान के बंधन में नहीं बाँधता। वह दोनों एक जगह और एक ही समय पर मौजूद रहें, ऐसा नहीं है। 'ऑनलाइन शिक्षण' किसी को भी एक अच्छा, सुगम और सहज विकल्प लग सकता है। यह शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए एकदम लचीला और सुविधाजनक भी है। इस आलोक में हम यह देखना चाहते थे कि जब ऐसे समय में इसके माध्यम से शिक्षण प्रारंभ किया गया, तब क्या हुआ?

यह कार्य सतह से देखने में जितना आसान लगता है, उतना है नहीं। अध्यापकों ने एक 'वर्चुअल कक्षा' को बनाने के लिए क्या किया? इस प्रश्न के जवाब में एक अध्यापक ने बताया कि, "पिछले सत्र के कक्षा अध्यापकों के पास जितने भी विद्यार्थियों के मोबाइल नंबर थे, उन सभी नंबरों को उन्होंने एक व्हाट्सएप समूह में जोड़ दिया। अध्यापकों ने अपनी सुविधानुसार कक्षा के नाम पर उस समूह का नाम रख दिया। कक्षा छठीं, कक्षा सातवीं क्रमशः इसी प्रकार अन्य कक्षाओं को वहाँ बना लिया गया। ऑनलाइन कक्षा इस तरह अस्तित्व में आई।"

कक्षा बना लेने से सभी विद्यार्थी इस कक्षा में सम्मिलित हो गए हों, ऐसा नहीं हुआ। यहाँ बुनियादी सवाल यह है कि क्या ये फ़ायदे उन बच्चों के लिए हैं जो 'डिजिटल कनेक्टिविटी' वाले डिवाइस नहीं रख सकते या जहाँ क्रय शक्ति में समानता नहीं है? इसी सिलसिले में हम निकटता से इस विषय पर अपनी समझ को बनाने का प्रयास करते हैं, तब इसकी वास्तविकता दिखाई देती है।

© NCERT not to be republished

एक शिक्षक ने कहा, "यहाँ तक पहुँचना आपकी जेब या खर्च करने की क्षमता पर निर्भर करता है।" सरकारी विद्यालयों में अधिकांश शिक्षार्थी कमज़ोर वित्तीय पृष्ठभूमि से आते हैं। ऐसी स्थिति में चीज़ें जटिल हो जाती हैं। बातचीत के दौरान अध्यापकों के अनुसार बहुत-से विद्यार्थी उनकी इन ऑनलाइन कक्षाओं से बाहर रह गए।

यह ऑनलाइन कक्षा 'इंक्लूसिव' या सबको अपने भीतर समाहित करने वाली बिलकुल भी नहीं थी। उन्होंने बताया कि वह चाहकर भी उन विद्यार्थियों को उन कक्षाओं तक नहीं पहुँचा पाए, जो इस कक्षा में आने से रह गए थे। इस क्रम में एक मोबाइल फ़ोन के न होने से विद्यार्थी की सारी काबिलियत या क्षमता बेकार चली गई। सिर्फ़ मोबाइल फ़ोन होने या न होने से आप कक्षा के भीतर या बाहर हो सकते हैं, यह एक नयी वास्तविकता थी। अध्यापकों में इन विद्यार्थियों के लिए एक ऐसा भाव है, जिसमें वह असहाय हैं। इस संदर्भ में वाधवा और अंदराबी (2020) कहते हैं कि इस तरह की शिक्षा व्यवस्था में दूर-दराज़ में रहने वाले विद्यार्थियों के साथ-साथ ही वे भी जिनके पास डिजिटल लिटरेसी के साधन नहीं हैं, वहाँ मोबाइल फ़ोन होना एक विलासिता है। केरल में एक 17 वर्षीय छात्रा ने इसलिए आत्महत्या कर ली क्योंकि उसके परिवार के पास ऑनलाइन कक्षा के लिए स्मार्ट फ़ोन खरीदने के पैसे नहीं थे। ये चौंकाने और डराने वाली स्थिति है, जहाँ गरीबी का आभास पहले से कहीं ज़्यादा निराश करने वाला है (सुदरसन, 2020)।

ऑनलाइन कक्षा में 'सहभागिता'

इन कक्षाओं में पहुँच और सहभागिता की समस्या थी, जिससे अध्यापकों को जूझना पड़ा। विज्ञान के अध्यापक ने बताया कि उनकी कक्षा में कुल साठ विद्यार्थियों में से केवल 25–30 विद्यार्थी सक्रिय थे। इसके लिए वह विद्यार्थियों द्वारा बार-बार बदलते नंबरों को 'कनेक्ट' नहीं कर पाने और विद्यालय रजिस्टर में दर्ज नहीं होने के कारणों का हवाला देते हैं। ऐसे में कई बार उन्हें नया नंबर भी नहीं मिल पाता है। यहाँ तक कि अगर उनके पास फ़ोन हैं तो वे ज़रूरी नहीं है कि व्हाट्सएप से जुड़े हैं। उनकी कक्षा में केवल 25–30 विद्यार्थी ही इसमें शामिल हो सकें। उन्होंने ऑनलाइन शिक्षा की अवहेलना करते हुए कहा कि यह बिलकुल प्रभावी नहीं है।

हिंदी के अध्यापक ने 'व्हाट्सएप' पर कक्षाओं को लेकर एक बहुत ही व्यावहारिक परेशानी को साझा किया कि एक ही 'व्हाट्सएप समूह' में सभी विषयों की बातचीत होने के कारण प्रत्येक विद्यार्थी को निर्देशित सहायता प्रदान करने में बाधा आती है। सभी विषयों के बारे में बातचीत एक ही समूह में होती है, जिसे एक ट्रैक या एक दिशा में रख पाना बहुत मुश्किल होता है। इसके लिए प्रत्येक विषय के अलग कक्षा समूह बनाए जा सकते हैं, लेकिन वह कहते हैं, अध्यापक और विद्यार्थी के लिए एक साथ इतने समूहों में होने की उसकी अपनी समस्याएँ हैं।

गणित के अध्यापक ने बताया की समूह में 40 प्रतिशत के करीब बच्चे जुड़ पा रहे थे। कुल 51 विद्यार्थियों में से केवल 20–22 के आस-पास। थोड़े प्रयासों के बाद अब ग्रुप में 43–44 बच्चे हैं, पर उसमें भी तकरीबन 10 बच्चे काम नहीं करते हैं। उन्होंने कहा, "मुझे व्हाट्सएप का 'रीड बाइ' भरोसेमंद नहीं लगता है। असल में स्थिति तभी पता चलती है, जब उनसे बात होती है।" वह व्यक्तिगत तौर पर कुछ दिनों

© NCERT not to be republished

के अंतराल पर बच्चों से बात करते हैं, तब बच्चे कहते हैं कि इंटरनेट काम नहीं कर रहा है।

कई अध्यापकों ने इस बात को बार-बार रेखांकित किया कि इस समय वे बच्चे ही पढ़ पाएँगे, जिनके अभिभावक सहयोग कर रहे हैं। एक अध्यापक उदाहरण देते हुए अपनी बात को स्पष्ट करते हैं कि, "इस स्थिति में मान लो एक मोबाइल है और पढ़ने वाले दो बच्चे हैं और घर में केवल पिता के पास मोबाइल है, जिसे वह अपने साथ रखते हैं। तब क्या बच्चा उनके वापस आने पर यानी की रात में आठ बजे पढ़ने की स्थिति में रहेगा?"

शिक्षण का परिवर्तित रूप

अध्यापकों ने इस विषम परिस्थिति में विद्यार्थियों को पढ़ाया। यह बहुत चुनौती भरा कार्य रहा। इस कार्य में चुनौतियाँ आएँगी और वे ऐसी परिस्थितियों से एक अध्यापक होने के नाते पहली बार गुज़र रहे हैं।

अध्यापक यह कक्षाएँ किस प्रकार संचालित कर पा रहे हैं, इस संबंध में पूछने पर एक अध्यापिका, जो अंग्रेज़ी पढ़ाती हैं, वह विस्तार से अपनी बात रखती हैं। उन्होंने कहा कि शुरू में, 'ज़ूम' (एप्लीकेशन) के माध्यम से कोशिश की गई थी। 'ज़ूम' का उपयोग करते समय विद्यार्थियों के साथ व्यक्तिगत रूप से बातचीत करने का एक विकल्प था, लेकिन (बाल अधिकारों के विषय में) अपनी प्रोफ़ाइल इमेज और आवाज़ साझा करने को एक सुरक्षित विकल्प नहीं माना जाता था और गृह मंत्रालय द्वारा चेतावनी दिए जाने के बाद कि डेटा साझा करना सुरक्षा कारणों से सुरक्षित नहीं है, हमने इसका उपयोग करना बंद कर दिया। वैसे भी इसे चलाने के लिए व्यक्तिगत ई-मेल आईडी की आवश्यकता थी, जो शिक्षकों के लिए सुरक्षा खतरों का कारण बन सकती थी। तब प्रत्येक विषय का एक अलग 'व्हाट्सएप समूह' बनाना दूसरा विकल्प था। असाइनमेंट भेजने के लिए व्हाट्सएप पर क्लास या ग्रेड ग्रुप बनाए गए थे। इसके बाद विद्यार्थियों और शिक्षक ने चर्चा के लिए समय तय किया, जिसमें विद्यार्थियों ने अपने प्रश्न टाइप किए और शिक्षक ने उत्तर टाइप किए। इस दौरान विद्यार्थियों के साथ आमने-सामने कोई बातचीत नहीं हुई। बाद में उन्होंने 'वॉयस ओवर' के साथ 'पावर-पॉइंट प्रेज़ेंटेशन' दिया और उन्हें 'यूट्यूब' पर अपलोड किया और 'व्हाट्सएप' ग्रुप में लिंक शेयर किया ताकि विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार देख सकें।

इसी संदर्भ में विज्ञान के शिक्षक की बातें भी गौरतलब हैं। वह कहते हैं, "यहाँ पढ़ने या अध्ययन सामग्री दो तरीकों से भेजा जाता है। यदि बच्चा रुचि दिखा रहा है तो हम एक ब्लैकबोर्ड केंद्रित वीडियो बनाते हैं और स्क्रीन के पीछे बोलते हैं, जिसे बच्चा ऑनलाइन देख या पढ़ सकता है। यदि बच्चा इसे ऑनलाइन नहीं देख रहा है तो हम इसकी यूट्यूब लिंक को शेयर करते हैं। हम वीडियो या लिंक को भेजने के दो-तीन दिन बाद विद्यार्थियों से पूछते हैं कि आपको भेजा गया वीडियो आपने देखा है या नहीं ताकि कुछ चर्चा हो सके। फिर मैं उन्हें उस विषय से संबंधित उत्तर देने के लिए कहता हूँ और कुछ प्रश्न देता हूँ। अब यह आकलन करना मुश्किल है कि उन्होंने होमवर्क पूरा कर लिया है या नहीं। इसके लिए हम उन्हें तसवीरें भेजने के लिए कहते हैं।"

© NCERT not to be republished

हमने दो अलग-अलग स्कूलों में सामाजिक विज्ञान पढ़ाने वाले दो शिक्षकों के साथ बात की। उनमें से एक ने व्हाट्सएप के ज़रिए पढ़ाए जा रहे अध्याय के बारे में बात की। उन्होंने कहा, मैंने चैप्टर से मुख्य बातें निकालीं और सारांश दिया। उदाहरण के लिए, सामाजिक विज्ञान में भूगोल के अंतर्गत 'पर्यावरण' से संबंधित अध्याय है। इसलिए मैंने 'पर्यावरण और इसके घटकों' के बारे में नोट तैयार किए। मैंने विद्यार्थियों के लिए यह विस्तार से लिखा है और प्रश्नों का एक सेट तैयार किया है। इस तरह मैंने उन्हें चैप्टर भेजा और होमवर्क के लिए कहा। अब, वर्तमान में मेरे पास ऐसा कोई तंत्र नहीं है जो यह आकलन करे कि विद्यार्थी ने क्या किया है। मैं सिर्फ़ उन्हें ऐसा करने के लिए कहता हूँ।" उन्होंने कहा, "यह स्थिति पहली बार और अप्रत्याशित है। मुझे लगता है कि विद्यार्थी काम कर रहे होंगे, भले ही वे जवाब देने में सक्षम नहीं हैं। हम इस समय सभी संभव प्रयास कर रहे हैं।"

इस तरह हम देख रहे हैं कि अध्यापक इस तरह की अप्रत्याशित परिस्थिति में किस प्रकार शिक्षण करता है, इसका उन्हें प्रशिक्षण न होने के बावजूद वह रचनात्मक होकर अपने विषय से संबंधित वीडियो बना रहे हैं। ब्लैक बोर्ड पर प्रश्न को समझाने का प्रयास कर रहे हैं। हम देख रहे हैं कि उपलब्ध सीमित संसाधनों के साथ अपनी कक्षा को बेहतर बनाने के हर संभव प्रयास कर रहे हैं। वह अपने विद्यार्थियों को अपना श्रेष्ठ देना चाहते हैं। वह चाहते हैं कि उनकी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को विषयगत जानकारियों से जोड़ा जा सके।

मूल्यांकन में समस्या

आप काम देंगे और उसके बाद यह सहज अध्यापकीय अपेक्षा है कि हम यह देखें, बच्चे कितना समझ या सीख पा रहे हैं। इस ऑनलाइन माध्यम में मूल्यांकन करना एक जटिल कार्य हो गया है। हम यहाँ चर्चा में केवल अंग्रेज़ी, हिंदी और गणित विषय से संबंधित समस्याओं को रख रहे हैं।

अंग्रेज़ी जैसे विषय में जहाँ भाषिक शुद्धता और अपनी बात को कह पाना एक कौशल है, वहाँ सीखने के क्रम में विद्यार्थियों का मूल्यांकन बहुत ही आवश्यक चरण है। मूल्यांकन के लिए अंग्रेज़ी की अध्यापिका ने विद्यार्थियों से असाइनमेंट की तसवीरें भेजने को कहा। प्रत्येक विद्यार्थी अपने मोबाइल से तसवीर खींच कर उन्हें भेजने लगा। हालाँकि, ऐसा करने से उन्हें सुधार और मूल्यांकन करने में बड़ी परेशानी हुई।

वह बताती हैं, "अंग्रेजी जैसे विषय में शिक्षार्थी को वर्तनी, व्याकरण और संरचना में मदद की ज़रूरत होती है। यही कारण है कि फ़ोन पर जाँच का कार्य उनके लिए आसान नहीं है। इस स्थिति में उन्होंने विद्यार्थियों को छोटे असाइनमेंट दिए और 'वर्कशीट' डिज़ाइन की। यहाँ वे रिक्त स्थान भर सकते हैं और अध्यापिका से तत्काल फ़ीडबैक प्राप्त कर सकते हैं।" बातचीत के दौरान उन्होंने कहा, "हमारे पास हर क्लास में 35 विद्यार्थी हैं। उसमें से 30 विद्यार्थी नियमित रूप से काम कर रहे हैं। फिर मेरी आठवीं कक्षा में करीब 25–28 विद्यार्थी शामिल होते हैं। मैं आपको यह डेटा उस असाइनमेंट की संख्या से दे रही हूँ, जो मुझे वापस मिलता है। मैं अपनी कक्षा 9 के साथ समस्या का सामना कर रही हूँ, जिसमें केवल सात शिक्षार्थी ही सक्रिय हैं।"

© NCERT not to be republished

इस परिदृश्य को देखते हुए वह कहती हैं, "यह मेरे लिए बहुत निराशाजनक भी है कि इस तरह जब आप एक पाठ तैयार करने में कितनी मेहनत कर रहे हैं और केवल 35 में से सिर्फ़ सात विद्यार्थी अपनी प्रतिक्रिया देते हैं या कोई बात कहते हैं, जिसका अर्थ है केवल 20 प्रतिशत तक आप पहुँच पा रहे हैं या केवल 20 प्रतिशत इसका उपयोग करने में सक्षम हैं।" उनका मानना है कि ये असाइनमेंट कम से कम कुछ समय के लिए पढ़ाने के उद्देश्य को पूरा करते हैं। बाकी का मूल्यांकन आप किस विधि से कर पाएँगे, यह समझ पाना बहुत कठिन है। समूह में विद्यार्थियों को सुझाव दिया गया है कि वे नोटबुक में अपना होमवर्क पूरा करें और एक रिकॉर्ड बनाए रखें, जिससे भविष्य में जाँच और मूल्यांकन करने में आसानी होगी।

हिंदी के अध्यापक के अनुभव भी कुछ इसी तरह आकार लेते हुए हमें दिखाई दिए। उन्होंने कहा, भाषिक शुद्धता में वर्तनी पर छोटी कक्षाओं में ध्यान दिया जाना बहुत ज़रूरी है। यहाँ जब विद्यार्थी अपने काम की तसवीर को साझा करता है, तब यह त्रुटि सुधार बहुत जटिल कार्य बन जाता है। कभी-कभी तो वाक्य संरचना को पूरा बदलने की आवश्यकता होती है। वह उन्हें कागज़ पर दोबारा से वर्तनी को शुद्ध करके भेजते हैं और सही वाक्य संरचना भी बताते हैं। इसके बावजूद यह अनुमान लगाना कि वह इस अंतर को जानकर भविष्य में गलतियाँ नहीं करेंगे, यह मान लेना उचित नहीं है।

गणित के अध्यापक ने मूल्यांकन से संबंधित कुछ व्यावहारिक बिंदुओं की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया। उनके अनुसार, बेसिक मैथ्स सबको आना ही चाहिए और यह 'ऑनलाइन' नहीं हो सकता क्योंकि हल करके दिखाना ज़रूरी है, जैसे— एच. सी. एफ़. उन्होंने कुछ सवालों को हल कर वीडियो बनाया और क्रम दर क्रम समझाने का प्रयास किया। वह बताते हैं, 'अकसर तो उनका जवाब आता नहीं और अगर आया भी तो पढ़ाए गए से एकदम अलग। उन्हें 'फेक्टर मेथड' से 'एच. सी. एफ़.' (HCF) पढ़ाया गया। पर उन्होंने उसे 'फेक्टर मेथड' के बजाय 'डिविजन मेथड' से कर दिया। जबकि वह तरीका कई साल पहले पढ़ाया गया था। ऐसी स्थिति में आप क्या कर सकते हैं!"

ऑनलाइन कक्षा में मूल्यांकन एक जटिल प्रक्रिया है। यदि विद्यार्थियों के द्वारा किए और समझे जाने वाले कार्य का सही और समुचित तरीके से अध्यापक आकलन नहीं कर पाएँगे, तब अध्यापन की भविष्य में क्या दिशा होगी, वह तय नहीं कर पाएँगे। हमें इस रूप में भी सोचना होगा।

विद्यार्थी-शिक्षक संबंध

ऑनलाइन कक्षा शिक्षक और विद्यार्थी के बीच एक संबंध का निर्माण तो कर रही है, लेकिन यहाँ पर यह सहज, स्वाभाविक और मानवीय प्रतीत नहीं होता है। यह उन्हें कई सारे अनुभवों और अवसरों से वंचित कर देती है। अध्यापकों ने यह बात स्वीकार की है कि वह ऐसी स्थिति में पढ़ाना चाहते हैं, जहाँ वह सीधे तौर पर विद्यार्थियों के संपर्क में आ सकें। उनकी दृष्टि से यह विधि दिलचस्प नहीं है। वह मानते हैं कि यहाँ इस 'वर्चुअल क्लास' में हम विद्यार्थियों के साथ उस तरह से 'कनेक्ट' नहीं कर पाते या जुड़ नहीं पाते, जिस तरह हम कक्षा में कर सकते हैं।

© NCERT not to be republished

इस विषय में विज्ञान के अध्यापक अपना एक अनुभव हमसे साझा करते हुए बताते हैं कि यह विद्यार्थी-शिक्षक संबंध किस तरह बहुत महत्वपूर्ण है। वह बोले, "बच्चे परिवार, माता-पिता और भाई-बहन के साथ जो जानकारी साझा नहीं कर पाते हैं, उन्हें शिक्षकों के साथ साझा करना आसान लगता है। 10वीं कक्षा में सिलेबस में प्रजनन से संबंधित एक अध्याय है। मैं क्लास ले रहा था और जब मैं परिवार नियोजन की बात कर रहा था तो एक विद्यार्थी ने कहा, 'मेरा व्यक्तिगत सवाल है, क्या मैं पूछ सकता हूँ', तो मैंने कहा, आप पूछने के लिए स्वतंत्र हैं। तो वहाँ (कक्षा की) अलग प्रकृति के कारण कई सवाल होते हैं, जो वह मुझ पर विश्वास कर पूछते हैं जो वह शायद ही अपने परिवार में किसी से पूछ पाते।"

वह कहते हैं, "अगर हम बच्चे के साथ दोस्ताना व्यवहार रखते हैं तो वे इस तरह के महत्वपूर्ण सवाल पूछने से दूर नहीं भागते। तो मेरा मानना है कि वहाँ इससे बेहतर रिश्ता नहीं हो सकता। मुझे अभी भी याद है कि हम विद्यार्थियों के रूप में इतने उदार नहीं थे और न ही हमारे शिक्षक। लेकिन आज के बच्चे जानकारी व समस्याएँ साझा करते हैं जो अच्छा है।"

एक अन्य अध्यापक ने कहा कि ऑनलाइन शिक्षण में ज़ाहिर है, एक दूरी है। फिर भी अगर बच्चे को कुछ परेशानी हो रही है तो हम मदद करने की पूरी कोशिश कर सकते हैं। अब हमारी कक्षा 10वीं के लिए बोर्ड परीक्षा अभी तक पूरी नहीं हुई है और बच्चे अखबार या टेलीविज़न में आने वाली फ़र्जी खबरों से बहुत परेशान हो जाते हैं। वह यही सोचते रहते हैं कि क्या इस बार परीक्षा को सच में रद्द कर दिया जाएगा। विद्यार्थी हमें जानते हैं और वे हम पर भरोसा करते हैं, इसलिए सही जानकारी हमारे माध्यम से ही उन तक पहुँच सकती है।

अंग्रेज़ी की अध्यापिका ने इस संदर्भ में इस बात को रेखांकित किया कि लॉकडाउन जैसी स्थिति में घर के सभी सदस्यों का एक साथ रहना भी विद्यार्थियों के लिए कई तरह की समस्याओं का सबब बन रहा है। वह बताती हैं, "उनकी एक कक्षा में दो बच्चे हैं, जिनके पिता काम नहीं करते। ऐसे ही एक और बच्चा है, जिसके माता-पिता नहीं हैं और उनके परिवार कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। उनके सामने वित्त एक बहुत बड़ी कठिनाई है या तो माताओं को काम करना पड़ता है और वे घर में मदद या कुछ छोटे कारखानों में तरह-तरह के काम करती हैं। उनके पास अपनी जितनी बचत है, उसी में गुज़ारा करना है। मैं बहुत भाग्यशाली मानती हूँ कि मेरी कक्षा के बच्चे मेरे साथ इन सब बातों को बाँट सके। मेरी तरफ से जो कुछ भी हो पाया मैंने उनकी मदद करने की कोशिश की। मुझे लगता है, मेरे विद्यार्थियों की स्थिति अन्य सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों से बेहतर है और वह थोड़े बेहतर परिवारों से आते हैं। फिर भी समस्या तो है। आपको एक शिक्षक होने के नाते इस प्रकार के मुद्दों से भी साथ-साथ निपटना होगा।"

इन भावनात्मक समस्याओं और पहलुओं के अतिरिक्त अध्यापक विद्यार्थियों की सुरक्षा के बारे में भी बहुत चिंतित हैं। वह सब समय-समय पर इस संक्रमण से बचाव के तरीकों पर बातचीत करते हैं। विज्ञान शिक्षक ने विद्यार्थियों को वैज्ञानिक दृष्टि से इस संदर्भ में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा, "कोरोना के दौरान हम उन्हें हाथ धोने और रोकथाम जैसे उपायों पर नियमित अंतराल पर दिशानिर्देश दे रहे हैं।"

© NCERT not to be republished

गणित के अध्यापक ने बताया कि, "हम सब बच्चों से बात करते हैं, जैसे— एक बच्चे के पैरेंट्स नहीं हैं केवल दादी हैं। इसलिए वह थोड़ा भटक गया है। कल एक बच्चे से बात हुई जिसकी माँ नहीं हैं, पिताजी लगभग 15 साल से सऊदी अरब में हैं। उनके पिता वहाँ से कोई पैसा नहीं भेजते हैं। इस लॉकडाउन के दौरान तो वह फ़ोन भी नहीं कर रहे हैं। दो बड़ी बहने हैं, बड़ी बहन ने उन्हें पालने के लिए शादी नहीं की। वही इनकी देखभाल भी करती है। आर्थिक रूप से यह परिवार बहुत सुदृढ़ नहीं है। बड़ी बहन सिलाई वगैरह करके थोड़े पैसे कमाती है। वह पढ़ी-लिखी नहीं है, केवल थोड़ी उर्दू जानती है। वह बच्चा दिन में सेल्समेन का काम करता है।"

हम यह देख पा रहे हैं कि अध्यापक और विद्यार्थी एक-दूसरे के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं। इस परिस्थिति में जबकि आप भौतिक रूप से किसी कक्षा में नहीं हैं, तब भी विद्यार्थी उन्हें अपनी पारिवारिक समस्याओं को बता पाए, यह अध्यापकों की अपनी ऐसी छवि है, जिसकी वजह से वह उनसे इस प्रकार मुक्त रूप से जुड़ पाए। अध्यापकों ने भी अपने स्तर पर अपनी सीमाओं के भीतर उनकी हर संभव मदद की।

महामारी का यह दौर कितना और बचा है, यह हमें नहीं पता, लेकिन भविष्य में बच्चों के लिए हमें कुछ ऐसे वैकल्पिक माध्यमों को टटोलना होगा, जहाँ वह अपनी बातों को इसी तरह कह पाएँ और हम उनकी भावनात्मक मदद कर पाएँ।

कार्य-जीवन संतुलन

इन सारी बातों और महत्वपूर्ण बिंदुओं के बीच हमने अध्यापकों से इन परिस्थितियों में अध्यापन करने के अलावा उनके व्यक्तिगत जीवन से जुड़े पहलुओं को भी जानने का प्रयास किया। सभी अध्यापकों ने एक सिरे से इस बात को स्वीकार किया कि कार्य करने के घंटों में बहुत वृद्धि हुई है। बहुत सारे कार्यों को सरल और सहज करने के प्रयास में बहुत समय लग रहा है, जिससे उनका पारिवारिक जीवन भी प्रभावित हुआ है। विज्ञान विषय की एक अध्यापिका ने बताया कि काम के घंटे दोगुने से अधिक हो गए हैं।

अंग्रेज़ी की अध्यापिका ने कहा कि सारी ऑनलाइन कक्षाएँ एक या एक घंटे से अधिक की होती हैं। कभी-कभी तो समूह चर्चा समाप्त होने के बाद आप व्यक्तिगत रूप से उन बच्चों से बात कर रहे होते हैं। गणित विषय के अध्यापक ने कहा की कक्षा की तैयारी में काफ़ी समय लग जाता है। कक्षा 6 से 10 तक के लिए वीडियो बनाना मुश्किल काम है। इससे व्यक्तिगत जीवन प्रभावित हुआ है। एक अध्यापक ने कहा कि इस चुनौतीपूर्ण समय में अध्यापकों की स्थितियों को कोई नहीं देख रहा है।

इसी के साथ हम यह भी देख रहे हैं कि सोशल मीडिया पर अध्यापकों की तनख्वाह काटने की बातें और उनके पेशे को लेकर तमाम ऐसी बातें सामने आ रही हैं, जिससे उनमें निराशा उत्पन्न हो रही है। जबकि हम देख रहे हैं कि वह ऑनलाइन शिक्षण ही नहीं कर रहे, बल्कि महामारी के दौरान राशन बाँटने से लेकर क्वारंटीन सेंटरों, लोगों के लिए बनाए गए अस्थायी शेल्टरों और भोजन वितरण में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं और दुर्भाग्य से कई अध्यापक स्वयं संक्रमित हो गए है या संक्रमण से उनकी मृत्यु तक हो गई है।

एक तरफ़ शिक्षक कर्तव्य परायणता से अपना काम कर रहा है, दूसरी तरफ़ उसकी अपनी मानसिक परिस्थितियाँ हैं। वह यदि महिला अध्यापिका है,

© NCERT not to be republished

तब उसके काम के घंटों में बेतहाशा वृद्धि हुई है। हम कैसे इन सब पहलुओं को नज़रअंदाज़ कर सकते हैं। इन सब पहलुओं के साथ हमें अध्यापकों की कार्य स्थितियों को नए सिरे से देखने की ज़रूरत है।

निष्कर्ष

इस संपूर्ण चर्चा के दौरान स्पष्ट हुआ कि यह ऑनलाइन शिक्षण जितनी भी सुविधाओं की बात करता है, सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के संदर्भ में हमें ठहरकर सोचना होगा। वह जिस सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं, उनके लिए यह ऑनलाइन कक्षाएँ, एक विषमतामूलक निर्मितियों की तरह उभरकर सामने आ रही हैं। इस तकनीक आधारित विषमता को किस तरह भविष्य में कम या खत्म किया जा सकता है, इस पर विचार किया जाना चाहिए।

दूसरी तरफ़ ऐसी कक्षाओं के दौरान अधिगम (या लर्निंग) को सुनिश्चित करना अपने आप में चुनौती भरा कार्य है। जो भी पाठ या कॉन्सेप्ट अध्यापक अपने विद्यार्थियों के साथ साझा कर रहे हैं, वह उसे कहाँ तक समझ पाए, यह देख पाना उनके लिए बहुत मुश्किल हो गया है। विद्यालय की कक्षा व्यक्तिगत रूप से मूल्यांकन के कई अवसर देती है, जो यहाँ अनुपस्थित हैं।

इन सारे कार्यों के दौरान अध्यापक की छवि नए सिरे से बनती हुई दिख रही है। उसने इस लॉकडाउन में अपने स्तर पर शिक्षण प्रक्रिया को सुचारू बनाए रखने के लिए अपने आप स्वतंत्र निर्णय लिए हैं और नए प्रयोगों को करने से वह पीछे नहीं हटे हैं। किसी शासकीय आदेश के बिना उनका यह कदम सराहनीय और अनुकरणीय है।

वहीं अध्यापक और विद्यार्थी के संबंधों को भी हम एक अलग तरह से बनता हुआ देख रहे हैं। यहाँ अध्यापक और विद्यार्थी का संबंध प्रशासनिक और संस्थागत परिभाषाओं से कहीं अधिक गहरा और जटिल है। उन दोनों का यह संबंध अधिक मानवीय हुआ है। अध्यापक भावुक भी हैं और उनके लिए चिंतित भी हैं।

अंतिम बात यह है कि 'ऑनलाइन शिक्षण' को लेकर अभी बहुत सारी तैयारी करना शेष है। हम अपनी शुरुआत उस बिंदु से कर सकते हैं, जिस तरफ हमारा ध्यान यूनिसेफ़ की 2016 की रिपोर्ट '*द स्टेट ऑफ़ द वर्ल्ड्स चिल्ड्रन 2016— ए फेयर चांस फ़ॉर एवरी चाइल्ड*' और '*द स्टेट ऑफ़ द वर्ल्ड चिल्ड्रन 2017— चिल्ड्रन इन ए डिजिटल वर्ल्ड*' भी ध्यान दिलाती है। यह असमानताएँ स्वास्थ्य क्षेत्र से लेकर शिक्षा के क्षेत्र तक समान रूप से व्याप्त हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा इन असमानताओं को समाप्त करने में सक्षम है। शिक्षा यह भूमिका निभा सकती है, जिसके लिए बचपन से ही हमें प्रयासरत होना होगा और जेंडर, समुदाय, भाषा, क्षेत्र आदि में जकड़े सबसे वंचित बच्चों के लिए समान अवसरों का सृजन करना होगा।

वहीं '*द स्टेट ऑफ़ द वर्ल्ड चिल्ड्रन 2017— चिल्ड्रन इन ए डिजिटल वर्ल्ड*' हमारा ध्यान इस ओर ले जाती है कि 'इंटरनेट कनेक्टिविटी' दुनिया के कुछ सबसे हाशिए पर रहने वाले बच्चों के लिए ऐसे अवसरों का सृजन कर सकती है, जिससे उन्हें अपनी क्षमता को पूरा करने और गरीबी के पीढ़ी दर पीढ़ी चलते आ रहे चक्र को तोड़ने में मदद मिलेगी। इसके साथ ही डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ विशेष रूप से दूरस्थ क्षेत्रों में और मानवीय संकटों के दौरान बच्चों को सीखने और शिक्षा के लिए अवसर प्रदान कर

© NCERT not to be republished

रही हैं। बच्चों को उन मुद्दों की जानकारी प्राप्त करने की अनुमति देती हैं जो उनके समुदायों को प्रभावित करते हैं और उन्हें हल करने में मदद कर सकती हैं। इन संभावनाओं के बीच हमें यह तथ्य भी ध्यान में रखना होगा कि दुनिया भर में लगभग 29 प्रतिशत युवा, लगभग 346 मिलियन व्यक्ति ऑनलाइन नहीं हैं। डिजिटल विभाजन भी प्रचलित आर्थिक अंतराल को दर्शाता है, जो धनी पृष्ठभूमि के बच्चों के फ़ायदों को बढ़ाता है और सबसे गरीब और वंचित बच्चों को अवसर प्रदान करने में विफल रहता है। एक डिजिटल जेंडर अंतर भी है। वैश्विक स्तर पर एक डिजिटल जेंडर भेद भी दिखाई देता है। जहाँ 2017 में महिलाओं की तुलना में पुरुषों ने 12 प्रतिशत अधिक इंटरनेट का इस्तेमाल किया। भारत में एक तिहाई से भी कम इंटरनेट उपयोगकर्ता महिलाएँ हैं। इस संदर्भ में हम ढाँचागत माध्यम को आधार बनाकर ही आगे बढ़ सकते हैं। उस माध्यम की मदद से नहीं जो अभी बहुत से लोगों की पहुँच से ही बाहर है।

संदर्भ

कृष्ण, के. 1991. *पॉलिटिकल एजेंडा ऑफ़ एजुकेशन— ए स्टडी ऑफ़ कोलोनियलिस्ट एंड नेशनलिस्ट आइडियास*. सेज पब्लिकेशंस नयी दिल्ली.

यूनिसेफ़. 2016. *द स्टेट ऑफ़ वर्ल्डस चिल्ड्रेन 2016—ए फ़ेयर चान्स फ़ॉर एव्री चाइल्ड*. यू.एन., न्यू यॉर्क.

———. 2017. *द स्टेट ऑफ़ वर्ल्डस चिल्ड्रेन 2017— चिल्ड्रेन इन ए डिजिटल वर्ल्ड*. यू.एन., न्यू यॉर्क.

वाधवा, एन. और आर. अंदराबी. 03 जून, 2020. पॉलिटिक्स ऑफ़ ऑनलाइन एजुकेशन एंड सबालटर्न इमजिनेशन. *कारवाँ इंडिया*.

सारंगपाणी, पी. 2003. *कन्स्ट्रक्टिंग स्कूल नॉलेज— एन एथनोग्राफ़ी ऑफ़ लर्निंग इन एन इंडियन विलेज*. थाओसैंड ओक्स, सेज पब्लिकेशंस, केलिफ़.

सुदरसन, एस. 09, जून, 2020. कोरोनवायरस इंडिया— 17-इयर-ओल्ड गर्ल कम्मीट्स सूइसाइड ड्यू तो लैक ऑफ़ मनी टू बाइ स्मार्टफ़ोन फ़ॉर ऑनलाइन क्लाससेस. *वर्ल्ड एशिया*. https://gulfnews.com/world/asia/india/coronavirus-india-17-year-old-girl-commits-suicide-due-to-lack-of-money-to-buy-a-smartphone-for-online-classes-1.1591722490820 से प्राप्त किया गया है.

© NCERT not to be republished